c. अप auferre. MAN. 2. 27.: गार्भिकश्चै ’नो द्विजानाम् अपमृज्यते·

c. अव detrahere, demere. MAH. 1. 5487.: धनुर्ज्याम् अवमृज्य·

c. आ abstergere. M. 2. 2224.: सा विवर्णम् आमृज्य मुखङ् करेण·

c. नि *id.* MAN. 3. 216.: तेषु दर्भेषु तं हस्तन् निमृज्यात्·

c. परि abstergere, siccare, purificare. R. Schl. II. 72. 31.: येन (पाणिना) मां रजसा ध्वस्तम् अभीक्ष्णम् परिमार्ज्जति; MAH. 3. 584.: चक्षुषी परिमार्ज्जन्ती· *Trop.* RAGH. 14. 35.: वाच्यं त्यागेन पत्न्याः परिमार्ष्टुम् ऐच्छत्·

c. प्र 1) abstergere, purificare, abluere. BHATT. 17. 55.: खड्गान्; MAN. 2. 60.: द्भिः प्रमृज्यात् ततो मुखम्; RAGH. 3. 41.: जलेन लोचने प्रमृज्य; N. 5. 4.: प्रमृष्टमणिकुण्डलः· *Trop.* auferre, demere. RAGH. 6. 41.: अयशः प्रमृष्टम्· 2) mulcere. IN. 2. 24.: प्रमार्ज्जमानः शनकैर् बाहुना ’स्य; SA. 5. 102.

c. वि abstergere, purificare. SA. 5. 96.: विमृज्या ’श्रूणि नेत्राभ्याम्; DR. 6. 17.: चारुमुखम् विमृज्य·

c. सम् *id.* MAH. 2. 2186.

मृड् 6. et 9. *P.* exhilarare. BHATT. 7. 96.: अमृडित्वा सहस्राक्षम् (Schol. असुखिनङ् कृत्वा)· *In dial. Vêd.* मृड्, मृल् et मृळ् 1) exhilarare, laetificare. RIGV. 36. 12.: स नो मृल महान् असि «tu nos exhilara: magnus es»; 17. 1. 114. 2.; YAG'URV. (v. Westerg.): न त्वद् अन्यो मघवन् अस्ति मर्डिता· 2) *cum dat.* blandiri, favere, propitium esse. RIGV. 114. 6.: तनयाय मृल· 3) reficere, corrigere. RIGV. V. (v. Westerg.): यद् आगश् चकृम तत् सु मृळ· 4) *intrans.* gaudere. RIGV. V. (v. Westerg.): मृळ सुक्षत्र मृळय· — *Caus. c. dat. in dial. Vêd.* favere, propitium esse. RIGV. 12. 9.: तस्मै पावक मृळय· (Cf. मण्ड्, मद्, मन्द्, मुद्, पृड्, lat. *blandus.*)

मृण् 6. *P.* (हिंसायाम् *K.* हिंसे *V.*) occidere, ferire, laedere. *Cf.* मृ.

मृणाल *m. n.* fibra in caule loti floris.

मृणाली *f.* (a praec. signo *fem.*) *id.* N. 16. 13.

मृतक *n.* (a मृत mortuus s. क) corpus hominis mortui, cadaver. LASS. 4. 11.

मृति *f.* (r. मृ s. ति) mors. HEM. (Lat. *mors* e *mor-ti-s.*)

मृत्तिका *f.* i. q. मृद् *f.* MAH. 1. 5724.

मृत्यु *m.* (a r. मृ adjecto त् s. यु, cf. gr. 635.) mors. SU. 1. 22.

1. मृद् 9. *P. interdum A.* 1) conterere. N. 13. 11.: स तम् ममर्द ... महीतले; 39.: मृदिता हस्तियूथेन; 23. 16.: पुष्पाण्य् उपादाय हस्ताभ्याम् ममृदे; R. Schl. II. 27. 7.: मृद्नन्ती कुशकण्टकान्· 2) fricare. MAH. 4. 467.: हस्तेन ममृदेचै ’व ललाटम्· — *Caus.* 1) conterere. R. Schl. I. 1. 72.: मर्दयामास तोरणम्· 2) fricare. UP. 52. (Cf. म्रद्, रद् mordere; prâcr. मल् e मर्द्, mutato र् vel द् in ल्; lat. *mordeo* = Caus. मर्दयामि, v. gr. comp. 109a).6.; *mando*, mutatâ liquidâ *r* in *n*; *molo, mola, malleus* e *mardeus*; gr. *μύλη, μέλδω, ἀ-μαλδύνω, ἄ-μαλος,* v. मृदु; goth. *malvja* contero, *mala* molo, *malo* tinea; anglo-sax. *s-melte*, germ. vet. *smilzu* liquefio = *μέλδω,* praefixo *s*, quod ad praef. सम् referri potest, v. Pott. 1. 245.; anglo-sax. *smylt* serenus, placidus, tranquillus, tenuis, v. मृदु; lith. *malù* molo, *mald-inu* et *mal-inu* molendum curo; russ. *melju* comminuo, molo, *molj* tinea; hib. *meilim* «I grind, pound, bruise», *millim* «I spoil, ruin, marr».)

c. अव 1) conterere. R. Schl. II. 93. 8.; MAH. 3. 16346.: नगरद्वारम् अवामृद्नात्· 2) fricare. MAH. 4. 468.

c. आ conterere. R. Schl. II. 96. 20.

c. परि 1) fricare, abstergere. R. Schl. II. 77. 26.: अश्रूणि परिमृद्नन्तौ· 2) superare. MAH. 1. 4979.: जवे लक्ष्याभिहरणे सर्वान् स परिमर्दति (cl. 1.).

c. प्र conterere, devastare. MAH. 1. 4467.: प्रमृद्य पुराष्ट्राणि·

c. वि *id.* MAN. 4. 70.: न मृल्लोष्टम् विमृद्नीयात्; MAH. 1. 5504.: विमृद्य राष्ट्रम्· — *Caus. id.* R. Schl. II. 88. 2.: विमर्दित·

2. मृद् *f.* (r. मृद्) terra, humus, lutum, argilla. (*v.* मृदा·)

मृदङ्ग *m.* (ut mihi videtur, e perdito substant. मृद in acc. et ग iens, cf. पतङ्ग et v. gr. 646.) tympanum (Wils.: